निस्केयर
NISCAIR

नवम्बर 2012

सम्पादक
प्रदीप शर्मा
सह सम्पादक
डा. बालक राम
प्रोडक्शन अधिकारी
सुप्रिया गुप्ता
गणेश साहनी
कला अधिकारी
नीरू विजन
योगेश कुमार आनंद
फोटोग्राफी
एल. एन. बांगुर
कम्पोजिंग
मीरा देवी
वरिष्ठ बिक्री एवं विज्ञापन अधिकारी
परवेज़ अली खान
वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

नवम्बर 2012
विज्ञान प्रगति

जवाहरलाल नेहरू : भस्म की रस्म

मुझे मेरे देश की जनता ने, मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों और बहनों ने, इत्ता प्रेम और इत्ती मुहब्बत दी है कि चाहे मैं जित्ता कुछ करूँ, वो उसके एक छोटे से छोटे हिस्से का बदला नहीं हो सकता। सच तो यह है कि प्रेम इत्ती कीमती चीज है कि इसके बदले कुछ देना मुमकिन नहीं है। इस दुनिया में बहुत से लोग हुए जिनको अच्छा समझ कर, बड़ा मानकर, उनका आदर किया गया, पूजा गया.... लेकिन भारत के लोगों ने, छोटे और बड़े, अमीर और गरीब, सब तबकों के बहनों और भाइयों ने मुझे इत्ता ज्यादा प्यार किया कि जिसका बयान करना मेरे लिए मुश्किल है और जिससे मैं दब गया। मैं आशा करता हूँ कि मैं अपने जीवन के बाकी वर्षों में अपने देशवासियों की सेवा करता रहूँ और उनके प्रेम के योग्य होऊँ।

बेशुमार दोस्तों और साथियों के मेरे ऊपर और भी ज्यादा एहसानात है। हम बड़े-बड़े कामों में एक-दूसरे के साथ रहे, शरीक रहे, उन्हें मिल-जुल करके किया है। यह तो होता ही है कि जब बड़े काम किये जाते हैं, उनमें सफलता भी होती है, नाकामयाबी भी होती है। मगर हम सब शरीक रहे सफलता की खुशी में और नाकामयाबी के दुःख में भी।

मैं चाहता हूँ और मन से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्में न अदा की जाएँ। मैं ऐसी बातों को मानता नहीं हूँ और सिर्फ रस्म समझ कर इनमें बंध जाना धोखे में पड़ना मानता हूँ। जब मैं मर जाऊँ तो मेरी इच्छा है कि मेरा दाह-संस्कार कर दिया जाए। अगर विदेश में मैं मरूँ, तो मेरे शरीर को वहीं जला दिया जाए, और मेरी अस्थियाँ इलाहाबाद भेज दी जाएँ। इनमें से मुट्ठी भर गंगा में डाल दी जाएं, और उनके बड़े हिस्से के साथ क्या किया जाए, मैं आगे बता रहा हूँ। इनका कुछ भी हिस्सा किसी हालत में बचा कर न रखा जाए।

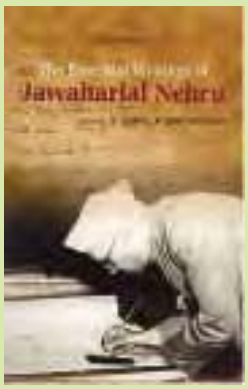

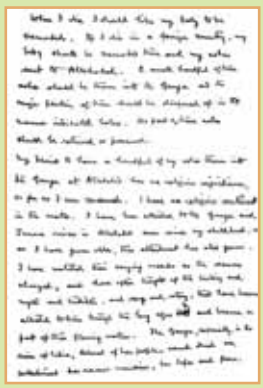

गंगा में अस्थियों का कुछ हिस्सा डलवाने की इच्छा के पीछे, जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, कोई धार्मिक ख्याल नहीं है। इस बारे में मेरी कोई धार्मिक भावना नहीं है। मुझे बचपन से गंगा और युमना से लगाव रहा है, और जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता रहा। मैंने मौसमों के बदलने के साथ इसके बदलते हुए रंग और रूप को देखा है, और कई बार मुझे याद आई उस इतिहास की, उन परम्पराओं की, पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और कहानियों की जो कि कई युगों से उनके साथ जुड़ गई हैं और उनके बहते हुए पानी में घुल-मिल गई हैं। गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है, जिससे लिपटी हुई हैं भारत की जातीय स्मृतियाँ, उसकी आशाएं और उसके भय, उसके विजय-गान, उसकी विजय और पराजय। गंगा तो भारत की प्राचीन सभ्यता की प्रतीक रही है, निशान रही है, सदा बदलती, सदा बहती, फिर वही गंगा की गंगा। वह मुझे याद दिलाती है हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही है, और उनके नीचे के उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदान जहाँ काम करते मेरी जिन्दगी गुजरी है। मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्काराते, उछलते-कुदते देखा है, और देखा है शाम के साये में उदास, काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेद भरी, जाड़ों में सिमटी-सी आहिस्ते-आहिस्ते बहती सुन्दर धारा, और बरसात में दहाड़ती-गरजती हुई, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिये, और सागर को बरबाद करने की शक्ति लिये हुए।

यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की प्राचीनता की, यादगार की, जो बहती आई है वर्तमान तक और बहती चली जा रही है भविष्य के महासागर की ओर।

भले ही मैंने पुरानी परम्पराओं, रीति और रस्मों को छोड़ दिया हो, और मैं चाहता भी हूँ कि हिन्दुस्तान इन

(शेषांश पृष्ठ 22 पर)

मूल्य
एक अंक : 20.00 रुपये
एक वर्ष : 200.00 रुपये
दो वर्ष : 380.00 रुपये
तीन वर्ष : 540.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 25846301, 04-07/370; 25841769
प्रोडक्शन : 25847353, 25846301, 04-07/217, 284
विज्ञापन : 25845359, बिक्री : 25841647, 25846301, 04-07/335, 295 फैक्स : 25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http:/www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी एस आई आर), डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।

वह शाम मस्तानी....और नदी किनारा....और ठंडी हवा

पहले जब वह कैसियस क्ले था तो कम ही लोग उसे जानते थे। पर न जाने क्यों, मोहम्मद अली के नाम से वह जग-विख्यात हो गया। सन् 1960 के रोम ओलंपिक ने तो उसका नाम हर दिशा में फैला दिया। बॉक्सिंग के अजीब-ओ-गरीब कारनामें दिखा उसने आसानी से गोल्ड मेडल जीता। और हाँ, एक बार पहनने के बाद उसने यह गोल्ड मेडल फिर गले से कभी नहीं उतारा। उसे इस मेडल पर सिर्फ़ नाज़ न था, उसे इस मेडल से सच्ची मोहब्बत हो गई थी। पर एक दिन... हाँ, वह अभागा दिन था। उस दिन उसने वह गोल्ड मेडल न सिर्फ़ गले से उतारा बल्कि ओहायो नदी में अपने

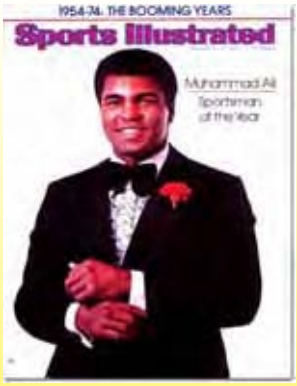

हाथों से फेंक दिया। पर क्या करता वह? उस दिन नदी किनारे अचानक उसने अपनी कार रोक दी थी। सुहाने मौसम में उस शाम नदी की लहरें तट से अठखेलियाँ कर रही थीं। इस खूबसूरत नज़ारे का तनिक आनंद लेने वह कार से निकल बाहर आ गया था... और मंत्रमुग्ध नदी को देखने लगा। अचानक उसने देखा कि बदमाशों के एक गुट ने उसे अपने घेरे में ले लिया है और हमले की तैयारी में हैं। ऐसे में उसे अपनी नहीं, मेडल की चिंता हुई। वह नहीं चाहता था कि उसकी जान से भी ज्यादा प्यारा मेडल बदमाशों के हाथ लगे। चुनाँचे, उसने मेडल नदी के हवाले किया और फिर उन बदमाशों से अकेला ही भिड़ गया।

कॉमनवेल्थ का स्पोर्ट्स-सम्राट : क्रिकेट

कॉमनवेल्थ का स्पोर्ट्स सम्राट कौन है? क्रिकेट, और कौन? 700 वर्ष पुराना खेल ईस्ट इंडिया कंपनी के नाविकों द्वारा सन् 1721 में भारत पहुंचा। पहला क्लब यहां पारसियों ने सन् 1848 में स्थापित किया। पहला त्रिकोणीय मैच अंग्रेजों-पारसियों-हिन्दू क्लबों के बीच सन् 1906 में खेला गया; रणजी प्रतियोगिताएं सन् 1934 में शुरू हुईं। पता है, विकेट्स और बेल्स के नामकरण के पीछे क्या रहस्य है? इंग्लैंड में पुराने ज़माने में भेड़ों को जिस बाड़े में रखते थे उसका गेट छोटा, तीन खड़ी लकड़ियों का होता था। इसी को विकेट्स बोलते थे। ऊपर दरवाजा बंद करने वाली लकड़ी खांचेदार होती थी जिसे बेल्स कहते थे। तो नामकरण सिंपल था न? दिलचस्प इतिहास वाला यह खेल मगर विज्ञान का बड़ा कर्मक्षेत्र है। अनुसंधानों ने कई रहस्य खोले हैं जिनमें सबसे अहम तथ्य है बॉल के चारों ओर हवा की 5 मिलीमीटर मोटी परत जो सीवन के कारण हर समय मौजूद रहती है। यही परत पिच की मृदा-आर्द्रता-घास आदि से तरह-तरह के करतब दिखा स्पिन-बाउंस व अन्य खेल दिखाती है। इन्हीं कारणों से पिच निर्माण, सीटिंग, लाइटिंग प्रबंधन, मौसम-विज्ञान, आंकड़ा एकत्रण, टी.वी. प्रसारण, गार्ड व अन्य उपकरण निर्माण आदि में अनगिनत विज्ञानी हमेशा मशगूल रहते हैं। कई देशों में कई तरह के सॉफ्टवेयर तैयार किए जा रहे हैं जिनसे एडवांटेज मिल सके। सच यही है कि विज्ञान के क्रमिक समावेश ने क्रिकेट को लगातार ज्यादा दिलचस्प बनाया है।

संपर्क सूत्र :
डॉ. देवकी नंदन, बी-707, प्रगति अपार्टमेंट्स, प्लॉट नं. 5 सी, सेक्टर-11, द्वारका, नई दिल्ली-110 075

(पृष्ठ 5 का शेषांश)

सब जंजीरों को तोड़ दे, जिनमें वह जकड़ा है, जो उसके आगे-बढ़ने से रोकती है और जो देश में रहने वालों में फूट डालती है, जो बेशुमार लोगों को दबाए रखती है और जो शरीर और आत्मा के विकास को रोकती है, चाहे यह सब मैं चाहता हूँ, फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं अपने को इन पुरानी बातों से बिल्कुल अलग कर लूँ। मुझे फ़ख्र है इस शानदार उत्तराधिकार का, इस विरासत का जो हमारी रही है और हमारी है, और मुझे यह भी अच्छी तरह से मालूम है कि मैं भी, हम सबों की तरह, इस जंजीर की एक कड़ी हूँ, जो कि कभी नहीं और और कहीं नहीं टूटी है और जिसका सिलसिला हिन्दुस्तान के अतीत इतिहास के आरम्भ से चला आता है। यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता, क्योंकि मैं उसकी बेहद कद्र करता हूँ, और मुझे प्रेरणा, हिम्मत और हौसला मिलता है। मेरी इस आकांक्षा की पुष्टि के लिए और भारत की संस्कृति को श्रद्धाँजलि भेंट करने के लिए, मैं यह दरखास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए, जिससे कि वह उस महासागर में पहुँचे जो हिन्दुस्तान को घेरे हुए है।

मेरी भस्म के बाकी हिस्से का क्या किया जाए? मैं चाहता हूँ कि इसे हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए उन खेतों पर, जहाँ भारत के किसान मेहनत करते हैं ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसी का अंग बन जाए।

29 जून, 1954
जवाहरलाल नेहरू